विशाल; **क्षीणे**=क्षीण होने पर; **पुण्ये**=पुण्य के; **मर्त्यलोकम्**=मृत्युलोक पृथ्वी में; **विशन्ति**=गिरते हैं; **एवम्**=इस प्रकार; **त्रयी**=तीनों वेदों के; **धर्मम्**=सकाम-कर्म-मत के; **अनुप्रपन्नाः**=अनुगामी; **गतागतम्**=जन्म-मृत्यु को; **कामकामाः**=भोगकामना वाले; **लभन्ते**=प्राप्त होते हैं।

### अनुवाद

वे उस स्वर्गीय विषयसुख को भोग कर पुण्य क्षीण होने पर फिर इस मृत्युलोक में गिरते हैं। इस प्रकार वैदिक कर्मकाण्ड से उन्हें क्षणभंगुर सुख की ही प्राप्ति होती है—वे जन्म-मृत्यु रूप चक्र में पड़े रहते हैं।।२१।।

### तात्पर्य

स्वर्गीय लोकों को प्राप्त जीव जगत् की तुलना में अधिक जीवन और इन्द्रियतृप्ति की श्रेष्ठ सुविधाओं को भोगता है। परन्तु उसे वहाँ सदा के लिए नहीं रहने दिया जाता। पुण्यकर्मफल के क्षीण होने पर उसे फिर इस मृत्युलोक में भेज दिया जाता है। **वेदान्तसूत्र** में निर्दिष्ट पूर्णज्ञान **(जन्माद्यस्य यतः)** की प्राप्ति जिसे नहीं हुई है अथवा जो सब कारणों के परम कारण—श्रीकृष्ण को तत्त्व से नहीं जानता, वह मनुष्य जीवन के परम लक्ष्य की प्राप्ति में विफल रहता है। वह बार-बार उच्च लोकों में जाने और फिर मृत्यु-संसार में लौटनेरूप चक्र में ही भटकता रहता है। भाव यह है कि देवोपासक को उस वैकुण्ठ-जगत् की प्राप्ति नहीं होती, जहाँ से फिर कभी गिरने का भय नहीं रहता। वह तो उच्च-निम्न लोकों में आवागमन रूपी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही भ्रमण करता रहता है। अतएव अच्छा हो यदि सच्चिदानन्दमय जीवन के आस्वादन के लिए वैकुण्ठ-जगत् को चला जाय, जिससे इस दुःखमय भयंकर संसार में फिर कभी न आना पड़े।

**अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।**
**तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।२२।।**

**अनन्याः**=अनन्य भाव से; **चिन्तयन्तः**=चिन्तन करते हुए; **माम्**=मुझे; **ये**=जो; **जनाः**=मनुष्य; **पर्युपासते**=भलीभाँति निष्कामभाव से भजते हैं; **तेषाम्**=उन; **नित्य**=निरन्तर; **अभियुक्तानाम्**=भक्तिनिष्ठ मनुष्यों की; **योगक्षेमम्**=सम्पूर्ण आवश्यकताओं का; **वहामि**=वहन करता हूँ; **अहम्**=मैं (स्वयं)।

### अनुवाद

परन्तु जो मनुष्य अनन्य-मन से मेरे दिव्य रूप का चिन्तन करते हुए भक्तिभाव सहित मेरा भजन करते हैं, उनके योगक्षेम का मैं स्वयं वहन करता हूँ।।२२।।

### तात्पर्य

जिसे क्षणभर के लिये भी कृष्णभावना का विरह असह्य है—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद सेवन, वन्दन, अर्चन, दास्य, सख्यभाव और आत्मनिवेदन—इस नवधा भक्ति के परायण हुआ वह भक्त चौबीस घण्टे श्रीकृष्ण के अनन्य चिन्तन में ही तन्मय रहता